दिव्यांगों के लिए स्माईल ईयर
दिनांक २६ जनवरी, २०१७ से दिनांक २६ जनवरी २०१८ तक
ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट NGO के माध्यम से
क्रिस्टल डेन्टल केयर (डॉ. शाश्वत जैन एवं चिकित्सक दल)
दिव्यांगों व शहीद सैनिकों के जरुरतमंद परिवारों के लिए
नि:शुल्क जाँच एवं निदान के लिए प्रतिबद्ध है

મંત્ર યુગપરિવર્તક પ. પૂ. સંતશ્રી ઋષિ પ્રિતેશભાઈના
આશિર્વાદ અને માર્ગદર્શનથી શરુ થયેલ...

KRYSTAL DENTAL CARE

MULTISPECIALTY DENTAL CLINIC
DIGITAL SMILE DESIGN AND IMPLANT CENTRE
180, Titanium City Centre Mall, Near IOC Petrol Pump,
Anandnagar Road, Satellite, Ahmedabad - 380015
Clinic : 079 - 48008004

DSD

Dr. Shashwat Jain
+91 99786 01890
M.D.S. - Prosthodontics (Manipal)
PGCOI - Implant Specialist
DSD - Digital Smile Design
TIMINGS :
10.00 am to 08.00pm

શ્રી પી. સી. જૈન
ચાર્ટડ એકાઉન્ટન્ટની
છત્રછાયામાં ચાલતી...

દાંતના તમામ દર્દોનું
એકમાત્ર
સમાધાન સ્થળ એટલે...
ક્રીસ્ટલ
ડેન્ટલ કેર

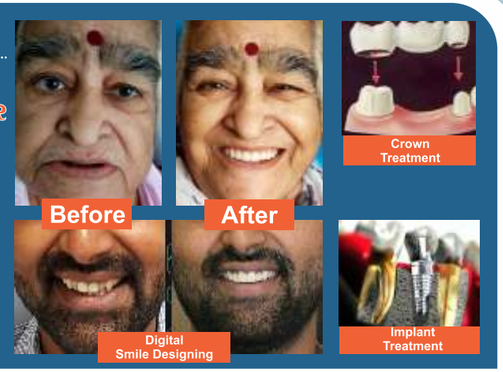

Consultant Prosthodontist
& Implantologist

- Maxillofacial Prosthetics
  - Cancer Rehabilitation
  - Trauma Rehabilitation
- Implant Rehabilitations
- Digital Smile Designing
- Full Mouth Rehabilitations
- Crowns & Veneers
- Full & Partial Dentrures

WHAT WE DO:

- Implant treatment
- Digital Smile Design
- Dentistry for aged patients
- Fixed and removable dentures
- Crowns and Veneers
- Prosthetic replacements (Eye, Ear, Nose, Fingers)
- Orthodontics
- Dentistry for Kids
- Root canal treatment
- Gum treatment
- Laser dentistry

OPG Facility available
Pick up & Drop Facility for Senior Citizens

Website : www.krystaldentalcare.com | Email: drs@krystaldentalcare.com

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

अक्टूबर : २०१७ सहयोग शुल्क : रु. १.०० अंक : १०

दिव्यांग सेतु

संपादक : संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

हमारे देश मे सब समान है, साथ मिलकर हम सब
देश में सकारात्मक बदलाय ला शकते है ।
– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

यु. पी. सरकार दिव्यांगो के लिए
संवेदन शीलता से काम कर रही है ।
– योगी आदित्यनाथ

भारत के आने वाले समय मे हर दिव्यांग
प्रगति की ओर बढता जायेगा ।
– संत श्री ॐऋषि प्रितेशभाई

रामदास आठवले
RAMDAS ATHAWALE

सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री
भारत सरकार

MINISTER OF STATE FOR
SOCIAL JUSTICE & EMPOWERMENT
GOVERNMENT OF INDIA

अ.प्र.2/20.वीआईपी / 12 / एमओएस(एसजेई)आरए / 2017
26 सितम्बर, 2017

ऊँकार फाउण्डेशन ट्रस्ट के प्रेरणास्त्रोत और सम्पादक संतश्री ऊँऋषि प्रितेशभाई की अध्यक्षता में प्रसारित **"दिव्यांग सेतु"** मासिक पत्रिका का अगस्त २०१७ का अंक प्राप्त हुआ।

दिव्यांगता के संदर्भ में आपकी मसासिक पत्रिका के माध्यम से की गई पहल अत्यन्त सराहनीय है।

आशा है कि भविष्य में भी आप इसी तरह प्रयासरत रहेंगे।

सस्नेह,

आपका,

(रामदास आठवले)

संतश्री ऊँऋषि प्रितेशभाई,
ऊँकार फाउण्डेशन ट्रस्ट,
ई ७२, आयोजननगर सोसायटी,
श्रेयस क्रासिंग के पास,
वसना, अहमदाबाद।

Room No. : 101, 'C' Wing, Shastri Bhawan, Dr Rajender Prasad Road, New Delhi-110001, Tel. : 011-23381656, 23381657, Fax : 011-23381669

दिव्यांग सेतु
मासिक पत्रिका

प्रेरणास्त्रोत और संपादक :
संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक :
मिहीरभाई शाह
M. : 9724181999

संपर्क-सूत्र
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)
Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad
ई-७२, आयोजन नगर सोसायटी,
श्रेयस क्रोसिंग के पास,
वासणा, अहमदाबाद.
मोबाईल : 9974955365,
9974955125

मुद्रक :
प्रिन्ट विजन प्रा.लि.
आंबावाडी बजार,
अहमदाबाद-६.
फोन : (079) 26405200

अक्टूबर : २०१७
पृष्ठ संख्या : १६
वर्ष : ०१
अंक : १०
सहयोग शुल्क : रु. १/-

संपादकीय

प्रिय वाचको

जय हिन्द...

दिव्यांग सेतु पत्रिका के माधय्म से हम लोगों में दिव्यांगता और उस से जुडी कई जटिल समस्याओं के जागरुकता फैलाना चाहते है और हमे इस कार्य में आप लोगों का पूर्ण रुप से सहयोग मिल रहा है और आगे भी मिलता रहेगा ऐसी अपेक्षा रखते है।

दिव्यांग सेतु के इस अंक में हम बौद्धिक एवं विकासात्मक दिव्यांगताओ से जुडी कुछ जानकारीयॉ और निर्देश प्रस्तुत कर रहे है । बच्चे में अगर मानसिक दिव्यांगता है तो कैसे पहचाने और उस पर किस तरह से कार्य करें ताकि आप अपने बच्चे का भविष्य सुधार सके । बौद्धिक अक्षमता जो की आपके बच्चे का एक नकारात्मक पहलु है उसे कैसे आप एक चुनौती के रुप में लेके उसे सकारात्मक भाव दे सकते है।

नेशनल ट्रस्ट और भारत सरकार समावेशी भारत का सपना देख रहे है । जिसमे हम दिव्यांग समाज की विभिन्न गतिविधियो में समान रुप से हिस्सेदार बन कसे । आइए हम भी इस कोशिश में साथ दे और ये सपना साकार करने में अपना योगदान दे।

- संत श्री ॐऋषि प्रितेशभाई

मानसिक विकलांगता पहचान कारन और इलाज

बच्चे के जन्म के बाद उसकी उम्र के हर पडाव में उसका विकास होता है जैसे ३ से ५ महीने की उम्र में चीजों को पकडना, ५ से ६ महीने की उम्र में बिना सहारे बैठना, ६ से ९ महिने की उम्र में रेंगना, ९ से १२ महीने के उम्र में चलना और कुछ शब्द बोलना ये सब तो आमतौर पे सिख लेता है लेकिन कुछ बच्चे जिनको कुछ मानसिक समस्या हो सकती है वे सब चीज़े काफी देरी से सीखते है या ठीक तरह से सिख ही नहीं पाते।

मानसिक विकलांगता वाले बच्चे अन्य बच्चों की तुलना में बैठना, घुटनों के बल चलना और पैरों पर चलना या बोलना सीख पाते है। मानसिक विकलांगता वाले बच्चों में निम्नलिखित विशेषताए देखी जा सकती है :

- भाष के विकास में देरी
- पढने लिखने में कठिनाई
- बौद्धिक अक्षमता
- बोलने की अक्षमता
- स्मृति कौशल की न्यूनता
- स्वयं-सहायता या खुद अपनी देखभाल करने की क्षमता जैसे कौशल के अनबकुल व्यवहार के विकास में देरी

मानसिक विकलांगता (एमआर), जिसे बौद्धिक क्षमता (आईक्यु) के ७० के भीतर होने के रुप में परिभाषित किया जाता है।

बचपन के प्रारंभ में हलिकी मानसिक विकलांगता (आईक्यु ५०-६०) समझी नही जा सकती और जब तक कि बच्चे स्कूल नही जाते, इसकी पहचान नही हो सकती यहां तक कि जब खराब शैक्षणिक प्रदर्शन की पहचान कर ली जाती हो तो भी सीखने की क्षमता कम होने के आधार पर हल्की मानसिक विकलांगता और भावनात्मक/व्यवहार संबंधी गडबडीयो का आंकलन करने के लिए विशेषज्ञों की जरुरत पड सकती है। हल्की मानसिक विकलांगतावाले व्यक्ति जब वयस्क होते है तो वे स्वतंत्र रुप से रहने और लाभकारी रोजगार करने में सक्षम हो सकते है।

औसत मानसिक विकलांगता (आइक्यु ३५-४१) लगभग जीवन मे पहले साल के भीतर स्पष्ट होती है। औसत मानसिक विकलांगता वाले बच्चों को विद्यालय घर और समुदाय में काफी समर्थन की आवश्यकता होती है, ताकि वे उन जगहो पर पूरी तरह से भागीदारी कर सके।

बौद्धिक अक्षमता / मानसिक मंदता :

बौद्धिक अक्षमता के दो पहलू होते है :

१. बौद्धिक कार्य : इसे बौद्धिक आंक याने की IQ कहते है। ये बुद्धि आंक या IQ, व्यक्ति की सीखनेकी, कारण देने की, समस्या को सुलझाने की, निर्णय शक्ति की पहचान देता है। औसत बौद्धिक स्कोर १०० होता हैं और बहुमत लोगों में ८५ से ११५ तक का स्कोर देखा जाता है। परन्तु बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों में ये स्कोर ७० से नीचे रहता है।

२. अनुकूलित व्यवहार : अनुकूलित व्यवहार स्वयं- सहायता या खुद अपनी देखभाल करने की क्षमता, संचार कौशल जैसे कौशल के अनुकूल व्यवहार रोज बरोंज की जिंदगी में बहोत जरुरी होते है। बच्चे के अनुकूलित व्यवहार को मापने के लिये विशेषज्ञ उस बच्चे के व्यवहार को बारीकी से देखते है और उसकी तुलना उसी उम्र के दूसरे बच्चे के साथ करते है, कैसे वो अपने घर वालो और बहार के लोगो के साथ बातचीत करता है और उनकी बाते समझता है उस पर ध्यान दिया जाता है।

बौद्धिक अक्षमता लगभग एक प्रतिशत (१%) आबादी को प्रभावित करती है उस १% में से ८५% में हलकी मानसिक विकलांगता पायी जाती है।

हल्की मानसिक विकलांगता वाले बच्चे नयी चीजे सिखने और समजने में कुछ ही कदम पीछे होते है और सही शिक्षा मिले तो जब वे वयस्क होते है तब स्वतंत्र रुप से रहने और लाभकारी रोजगार करने में सक्षम हो सकते है।

आइए जानते है कुछ अनुकूलित व्यवहार के सम्बंधित अशक्तता

सिखने की अशक्तता (Learning Disability)

इंसान में सिखने की अशक्तता एक न्यूरोलोजिकल यानि मस्तिष्क तंत्र से जुडी समस्या है। जो संदेश भेजने, ग्रहण करने और उसका विश्लेषण करने की मस्तिष्क की क्षमता या योग्यता को प्रभावित करती है। सीखने की अशक्तता से जुड रहे बच्चो को पढने, लिखने, बोलने, सुनने, गणित के सवालो और सूत्रो को समझने और सामान्य अवधारणाओं को समझने में कठिनाई आ सकती है।

सिखने की अशक्तता में निम्न प्रकार होते है,

१. डिस्लेक्सिया : इस बिमारी में बच्चे को शब्दों को पहचान ने के सम्बंधित परेशानी होती है जिससे उसे पढने में परेशानी आती है। इसे पढने की अशक्तता भी कह सकते है।

२. डिस्केलकुनिया : इसमे बच्चे गणित के अंको को पहचानने में असमर्थ होते है और उनको गणितिय सवालों और सूत्रो को समझने और उसे सुलझाने में परेशानियाँ रहती है।

३. डिसग्राफिया : इस बीमारी से ग्रस्त बच्चो को लिखने के सम्बन्धित परेशांनिर्यां रहती है। वो शब्दो को सही ढंग से सही जगह में लिख नहीं पाते।

कैसे पहचाने बच्चे में सिखने की अक्षमता को :

यह एक जटिल प्रक्रिया है और इसमे माता–पिता का बच्चे के विकास के हर पहलू और समय का ध्यान रखना जरुरी होता है।

- १८ महीने का बच्चा अगर बोल नही पाता
- सरल और साधारण शब्दों को बोल और समझ नही पाता
- नियमों और निर्देशो को नही समझ पाता
- उचित आयु में भी दुसरे बच्चो के मुकाबले पढने लिखने में पीछे रहना और अंको तथा शब्दों को न समझ पाना जैसे ''२५'' को
- ''५२'' समझना, ''b'' को ''d'' समझना, ''on'' को ''no'' समझना और ''S'' को संख्या ''5'' समझना
- वर्णमाला के अक्षरो को पहचानने में असमर्थ होना
- अपनी चीजे जैसे कोपी किताब, पेन्सील आदि का ख्याल नही रख पाता है

सीखने की अक्षमताओ की पहचान एक जटिल प्रक्रिया है पहला कदम तो ये है कि देखने, सुनने और विकास संबंधी समस्याओं को छाँट लिया जाए तो अंतर्निहित अक्षमता के उपर नजर आ सकती है, इन परीक्षणों को कर लेने के बाद सीखने की पहचान की जाती है और इसके लिए मनोशैक्षणिक आंकलनो की मदद ली जाती है। इसमे अकादमिक उपलब्धि की टेस्टिंग और बौद्धिक क्षमता का आंकलन शामिल है।

सिखने की आवश्यक्तता के कारन :

सिखने की आवश्यकतता का कोई एक विशेष या इकलौता कारण नही है। लेकिन कुछ कारक है जो सिखने की अशक्तता पैदा कर सकते है। जैसे,

- आनुवांशिकता : ये देखा गया है कि एक बच्चा जिसके मातापिता को सीखने की अशक्तता है उसे यह होने की पूरी आशंका रहती है।
- गर्भावस्था के दौरान ड्रग या ऑल्कोहोल का सेवन, शारीरिक कष्ट या यातना
- जन्म के बाद कोई तनावपूर्ण घटनाक्रम जैसे तेज बुखार, सिर की चोट, अल्प पोषण या कान में गंभीर संक्रमण
- सीसा (लेड) जैसे हानी कारक विषैले तत्वो के संपर्क में आना (पानी, पेट, सेमेमिक, दि मै)
- बच्चे के शरुआती विकास के समय में ध्यान ना देना

क्या होने वाले बच्चे में बौद्धिक अक्षमता रोकी जा सकती है।

बौद्धिक अक्षमता के लिए जवाबदार कुछ कारणों को रोका जा सकता है जैसे,

- गर्भवती महिला को अल्कोहोल से दूर रहना चाहिये।
- गर्भवती महिला का तंदुरस्त खाना, अपनी देखभाल, संक्रमित रोगो से बचने के लिए समय पर टिके लगवाने रहना, होने वाले बच्चे को बौद्धिक अक्षमता के खतरे से दुर रखता है।
- आनुवांशिक विकार का इतिहास रखने वाले परिवारो को गर्भधारण से पहले आनुवांशिक परिक्षण करवा लेना चाहिए।
- अल्ट्रासाउंड और एम्निओसेटेसिस जैसे परीक्षणो द्वारा बौद्धिक अक्षमता से जुडी समस्याओं को गर्भावस्था के दौरान जाना जा सकता है।

बच्चे में बौद्धिक अक्षमता का निदान कैसे किया जाता है ?

बच्चे में बौद्धिक अक्षमता की आशंका को कुछ अलग अलग कारणों की वजह से किया जाता है। जैसे,

अगर बच्चे में आनुवांशिकता और चयापचय सम्बन्धी विकार की वजह से शारीरिक विषमता पायी जाती है तो बौद्धिक अक्षमता के निदान के लिये कुछ परीक्षण जैसे ब्लड टेस्ट, यूरिन टेस्ट, दिमाग की संरचनात्मक समस्या को जानने के लिए इमेर्जिग टेस्ट, सिजेरियन बच्चे में एक्ट्रोएन्सेफलोग्राम किये जाते है।

देरी से विकसित बच्चे में सुनने और मस्तिष्क सम्बंधित समस्याओं को नकारने के लिए डोकटर्स कुछ परिक्षण करते है। अगर बच्चे मैं ये कमियां नही है तो बौद्धिक अक्षमता के निदान के लिए तीन चीजे करते है जैसे, बच्चे के माता पिता के साथ बात–चित, बच्चे का अवलोकन और बच्चे मं बुद्धि तथा अनुकूलित व्यवहारों का परिक्षण। अगर बच्चा बुद्धि और अनुकुलिक व्यवहार दोनो ही परीक्षण में पीछे रहता है तो उसे बौद्धिक रुप से अक्षम माना जाता है। अगर कोई एक परिक्षण में वो पास हेता है तो उसे बौद्धिक अक्षमता नही माना जाता।

अगर बच्चे में बौद्धिक अक्षमता पायी जाती है उसके बाद पेशावरो (प्रोफेशनल्स) की टीम बच्चे की ताकत और कमजोरी का मूल्यांकन करती है इस से यह निर्धारित होता है की किस तरह की मदद से बच्चा अपने घर, स्कुल और समाज में सफलतापूर्वक रह सकेगा।

सिखने की अशक्तता का इलाज

जहां इस बीमारी का कोई सचोट इलाज नही है वहाँ बहोत से रास्ते है जिस से बच्चे की पढने लिखने और गणितिय सवालों को सुलझाने के कौशल को सुधारा जा सके। इस बीमारी की शरुआती पहचान बच्चे के इलाज या थेरेपी में मददगार हो सकतीहै। बच्चो के लिए इन्टर्वेशन प्रोग्राम उपलब्ध है। जिसमें विशेषज्ञो की टीम बच्चे के साथ मिलकर वैयक्तिक शैक्षणिक कार्यक्रम (Individualized Education Program - IEP) करते है जिसमें ये विवरण होता है कि बच्चा स्कूल मे किस तरह से बहेतर ढंग से सीख पाएगा जैसे बच्चे को अगर शब्द याद नही रहता तो उसे चित्र या कहानी के रुप मे समझा के सिखाया जाये। बच्चों को अगर सिर्फ देख के और सुन से समझ मै न आये तो दुसरे वैकल्पिक तरीके जैसे छु के, सूंघ के या फिर चख के समझाया जा सके। इसके आलावा स्पीच थेरापी, पारिवारिक परामर्श, शारीरिक चिकित्सा कुछ विशेष सहायक उपकरणो का प्रशिक्षण, पौष्टिक आहार का भी अर्ली इंटवैशंस मे समावेश किया होता है। रिसर्च के मुताबीक संगीत, कला, नृत्य जैसी वैकल्पिक प्रवृत्तियाँ भी बच्चे के लिये कारगत साबित हो सकती है।

पेडियाट्रिक न्युरोलॉजिस्ट, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, काउंसलर या परामर्शता जैसे विशेषज्ञ बच्चे की सीखने की अशक्तता को पहचानने और उसका इलाज करने के लिए सामूहिक रुप से काम कर सकते है।

बौद्धिक अक्षमता से प्रभावित बच्चे के माता-पिता अपने बच्चे के लिए क्या करे ?

- बौद्धिक अक्षमता और सिखने की अशक्तता के बारे में जितनी सही जानकारी मिल सकती है उसे लेने का प्रयत्न करें ताकि आप अपने बच्चे के लिए सही दिशा चुन सके।
- अपने बच्चे को स्वतंत्रा दे और नयी चीजों को सिखने के लिए प्रोत्साहित करे। उनको अपना काम अपने आप करने दें और ज़रुरत पडने पर ही हस्तक्षेप करे। उनके द्वारा किये गए काम को सकारात्मक प्रतिभाव दे।
- अपने बच्चे को सामूहिक रुप से काम करने के लिए प्रेरित करे।
- बच्चे के शिक्षक के साथ संपर्क मै रहे ताकि अपने बच्चे के विकास के बारे मे जान सके और उसे घर पर भी तालीम दे सके।
- दुसरे बौद्धिक अक्षमता से प्रभावित बच्चों के माता पिता के साथ मिले और इस विषय की जानकारी आप लिया करे। ये चीज आपके लिए एक भावनात्मक सहारे का काम भी कर सकती है।

होती है असाधारण योग्यता भी।

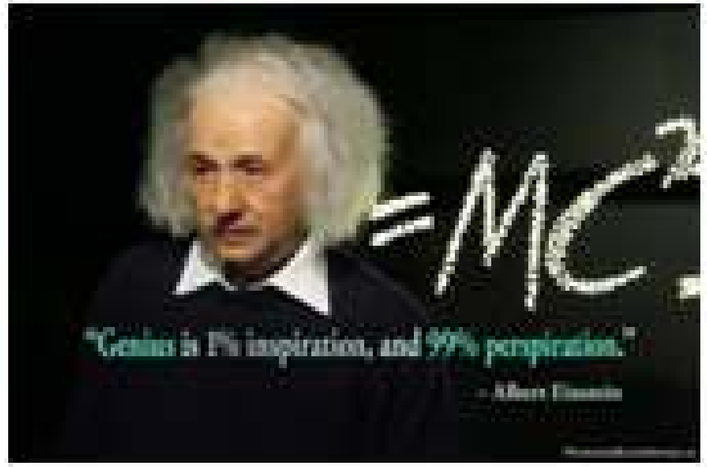

जो बच्चे सिखने की अशक्तता (लर्निंग डिसेबिलिटी) से ग्रस्त होते है वो भले ही सारी चीज़ें सीखने में समर्थ न हो लेकिन अगर उन्हे अपनी रुची के क्षेत्रों में आगे बढने के लिए प्रोत्साहीत किया जाये तो वे अपनी गजब की क्षमता, प्रतिभा और योग्यता का प्रदर्शन कर सकते है। उदाहरण के तौर पर अल्बर्ट आइंस्टीन जो की बडे ही जानेमाने भौतिक शास्त्री थे वो भी इस बीमारी से पीडीत थे। वाल्ट डिज्नी, जनरल ज्योर्ज पटटन और वाईस प्रेजिडेंट नेल्सन रोकफेलर को भी पढने में दिक्कत थी।

समावेशी भारत (Inclusive India)

नेशनल ट्रस्ट का लक्ष्य

नेशनल ट्रस्ट का प्रयास है की देश के बौद्धिक एवं विकासात्मक दिव्यांगताओं से प्रभावित व्यक्तओं को समाज की विभिन्न गतिविधियों में समाविष्ट कर एक समावेशी भारत का निर्माण हो।

इसका अर्थ है की सभी दिव्यांगजन पूर्ण अधिकारों के साथ समाज की प्रत्येक गतिविधियों का हिस्सा बन सके।

साईयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा २००६ में जारी घोषणा पत्र के लक्ष्यों के अनुसार यह अभियान दिव्यांग व्यक्तिओंको विद्यालयों, समाज तथा कार्यस्थलो में बराबरी की भागीदारी के लक्ष्य को रेखांकित करता है।

समावेशी भारत पहल के तीन प्रमुख लक्ष्य :

समावेशी शिक्षा :

इस लक्ष्य के अनुसार बौद्धिक एवं विकासात्मक दिव्यांग बच्चों और वयस्को के लिए स्कूल और कोलेजों को समावेशी बनाने का बडे पैमाने पर जागरुकता अभियान। भारत सरकार के मानव संशाधन विभाग, राज्य सरकारों, कार्पोरेट संस्थानो एवं जन हितैषी संस्थानो के साथ मिलकर सार्वजनिक एवं निजी शौक्षणिक संस्थाओं के भौतिक ढांचे को चलित उपकरण, सहायक उपकरण सुलभ जानकारी आदि द्वारा सुगम्य एवं समावेशी बनाना।

समावेशी रोजगार :

इस लक्ष्य के अनुसार वर्ष २०१७-१८ मैं, समावेशी नियोजन के सम्बन्ध में कम से कम २००० सार्वजनिक और निजी कोर्पोरेट क्षेत्र संगठनो में बौद्धिक दिव्यांगजनों के लिए रोजगार सृजन पर सकारात्मक प्रभाव पैदा करने की जागरुकता फैलाना।

समावेशी सामाजिक जीवन :

परंपरागत रुप से, विकासात्मक दिव्यांगजनो के लिए समाज के सांस्कृतिक जीवन में भाग लेने के अधिकार के रास्ते में बाधाओं का सामना करना पडता है। नेशनल ट्रस्ट का ये लक्ष है की राज्य सरकारो, स्वयं सेवी संस्थाओ, बौध्धिक दिव्यांगताओ से प्रभावित व्यक्तिओं तथा उनके परिवारो के साथ मिलकर सामाजिक गतिविधियों में समावेशीकरण के लिए महत्वपूर्ण एवं प्रभावकारी परिवर्तन लाना।

आपके आसपास अगर कोई भी दिव्यांग व्यक्ति है तो उन्हें हमेशा मददरूप बनने का प्रयत्न करें एवं हमारी संस्था का संपर्क करें ।

''दिव्यांग सेतु'' मेगेजिन नि:शुल्क प्राप्त करने के लिए आप अपना पूरा नाम-पता, मोबाईल नंबर और ई-मेइल आईडी ''ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट'' के पते पर भिजवाए ।

'दिव्यांग सेतु' पत्रिका में अपना विज्ञापन देकर आप भी दिव्यांगों की मदद के पुनीत कार्य में सहभागी बन सकते हैं ।

विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं

Title - 2 रू. १०,०००/-
Title - 3 रू. १०,०००/-
Title - 4 रू. १०,०००/-
आधा पेज - रू. ५,०००/-

विज्ञापन से प्राप्त समस्त राशि दिव्यांग कल्याणकारी योजनाओं में खर्च की जाएँगी ।

अभिनंदन

गुजरात के अहमदाबाद में अगस्त महीने में हुए खेल महाकुंभ में दिव्यांग केटेगरी में ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट सें जुडे बच्चों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया ।

ओम जानी : **स्कूल :** उत्थान तालीम केंद्र ● **माता का नाम :** ख्याती बेन जानी, बास्केट बोल मे पहले क्रमांक पे रहे।
ज़ैद मनसुरी : **स्कूल :** बी. एम. स्कुल ● **माता का नाम :** रुखसाना बानु, बोची खेल में पहले क्रमांक पे रहे।
विरल गोहिल : **स्कूल :** न्यू वे स्पेशल स्कूल ● **माता का नाम :** प्रीतीबेन गोहिल , बोची खेल में तीसरे क्रमांक पर रहे।

निरामय हेल्थ पॉलिसी की जानकारी देकर फॉर्म भरते हुए ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट के कार्यकर

केन्द्र सरकार द्वारा दिव्यांगों के उत्कर्ष हेतु चलाई जा रही

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल पाल्सी, ऑटीज़्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टीपल डिसेबिलिटी (Cerebral Palsy, Autism, Mental Retardation, Multiple Disability) से असरग्रस्त दिव्यांगों को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा ।
- रु. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु. ५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगों के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इन्श्योरेन्स मिल सकता है । (निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

- सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र (ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)
- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशन कार्ड की प्रमाणित कॉपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशन कार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हों तो)
- बैंक पास बुक की फोटो कॉपी (बैंक के IFSC कोड के साथ)
- उम्र का प्रमाण (वोटिंग कार्ड अथवा जन्म प्रमाण-पत्र अथवा विद्यालय छोड़ने का प्रमाण-पत्र)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा भरा जाएगा